भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-18 अंक-12 वि. स. 2079 युगाब्द 5124 फ़रवरी-2023 वार्षिक चंदा 200/- मूल्य प्रति - 20/-

मार्गदर्शक :

- डॉ कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

सदस्यता शुल्क : 12 वर्षीय चंदा - रू 2000/- संरक्षक सहयोग राशि - रू 5000/-

जन्म- 1719 बलिदान - 1734

वीर हकीकत राय

धर्म न्याय प्रिय राष्ट्र में, अनुपम भक्ति महान,
अभय निडर संकल्प दृढ़, सहित सदा गतिमान।
रहे सदा इतिहास में, अमर तुम्हारा नाम,
वीर हकीकत रॉय है, तुमको नमन प्रणाम।।

- शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 29 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) - रु. 2,000 की आजीवन (10 **वर्षीय**) सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) - रू. 2,000 की 12 **वर्षीय** एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन दिल्ली - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतू अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. अक्षय सेवा - दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. CSR फंड - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली - खाता सं. 41171580896 (IFSC : SBIN0013182)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

संसार में कोई भी प्राणी यह नहीं चाहता कि उसे दुःख हो, फिर भी जिस बात को हम नहीं चाहते हैं और दैवगति से वह हो जाती है तो दुख तो होता ही है। हम उसे देवेच्छा समझकर सह लेते हैं, किन्तु दुख आने पर भी जो दुखित नहीं होते वे धैर्यवान् कहलाते हैं। दुःख और सुख में चित्त की वृत्ति को समान रखना धैर्य कहलाता है। संसार का नियम है कि जिसने शरीर धारण किया है, उसे सुख और दुःख दोनों का ही अनुभव करना होगा, किसी एक का नहीं। अस्तु जब यही सत्य है, तो फिर दुःख में हम अधिक उद्विग्न क्यों हों, और सुख में फूलकर कुप्पा क्यों हो जायँ? हम धैर्य धारण करके उनकी प्रगति को ही क्यों न देखते रहें। जिन्होंने इस रहस्य को समझकर धैर्य का आश्रय ग्रहण किया है, संसार में वे ही सुखी समझे जाते हैं, उन्हीं की संसार पूजा करता है और ऐसे ही महान व्यक्ति प्रातःस्मरणीय समझे जाते हैं।

शरीर में व्याधि होते ही हम विकल हो जाते हैं। विकल होने से आज तक कोई नीरोग बन सका है क्या? उलटे और भी अधिक व्यथित हुए हैं। यह शरीर ही व्याधियों का घर है। जाति, आयु और भोगों को साथ लेकर ही तो यह शरीर उत्पन्न हुआ है। पूर्व जन्म के जो भोग हैं, वे तो भोगने ही पड़ेंगें। व्यथित होकर इधर-उधर रोने-धोने से मुक्ति नहीं मिलेगी। भोग बिना अपनी अवधि पूर्ण किये पीछा नहीं छोड़ने का। इसका मतलब यह नहीं है कि दुख से निवृत्ति के लिए हम कोई उद्योग न करें। दान, पुण्य, जप, तप और औषधि-उपचार अवश्य करें। किंतु उनसे आराम न होने पर अधीर मत हो जाएं। आप्त पुरुषों ने शास्त्र में जो उपाय बताये हैं, उन्हें ही हमें करना चाहिए, साथ ही धैर्य भी रखना चाहिए। धैर्य से ही हम व्याधियों के चक्कर से सुखपूर्वक छूट सकेंगे।

विपत्ति के समय सोचना चाहिए कि हमारे ही ऊपर ऐसी विपत्तियाँ आई हैं, सो बात नहीं। विपत्तियों का शिकार किसे नहीं बनना पड़ता? चक्रवर्ती महाराज हरिश्चन्द्र ने भी डोम के यहाँ नौकरी की। उनकी स्त्री अपने मृत बच्चे को दफनाने के लिये कफन तक नहीं प्राप्त कर सकी। जगत के आदि कारण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी चौदह वर्षों तक घोर जंगलों की खाक छानते डोले। वे अपने पिता चक्रवर्ती महाराज दशरथ को पावभर आटे के पिण्ड भी न दे सके। जंगल के इंगुदी-फलों के पिण्ड से ही उन्होंने अपने पिता की तृप्ति की। शरीर धारी कोई भी ऐसा नहीं है, जिसने विपत्तियों के कड़वे फलों का स्वाद न चखा हो। फिर हम अधीर क्यों हों? हमारे अधीर होने से हमारे आश्रित लोग भी दुःखी होंगे, इसलिये हम धैर्य धारण करके क्यों नहीं उन्हें समझायें? जो होना होगा, सो होगा। बस, ज्ञानी और अज्ञानियों में यही अन्तर है। लोक- दृष्टि में जरा, मृत्यु और व्याधियाँ ज्ञानी - अज्ञानी दोनों को ही होती हैं, किंतु ज्ञानी उन्हें अवश्यम्भावी समझकर धैर्य के साथ सहन करता है और अज्ञानी विकल होकर विपत्तियों को और बढ़ा लेता है। कम या अधिक, पर सभी शरीर धारियों को आपदाएँ झेलनी ही पड़ती हैं।

ज्ञानी काटे ज्ञान ते, अज्ञानी काटे रोय।
मौत, बुढ़ापा, आपदा, सब काहू को होय ॥

जो धैर्य का आश्रय नहीं लेते, वे दीन हो जाते हैं, परमुखापेक्षी बन जाते हैं। इससे वे और भी दुखी होते हैं। संसार में परमुखापेक्षी बनना, दूसरे के सामने जाकर गिड़गिड़ाना, दूसरे से किसी प्रकार की आशा रखना - इससे बढ़कर दूसरा कष्ट और कोई नहीं है। अस्तु हम चाहे किसी प्रतिष्ठान के मालिक, कर्मचारी, सेवक, व्यापारी, मजदूर, शिक्षक, अभिभावक, विद्यार्थी अथवा कोई भी हों, मनुष्य होने के नाते प्रकृति के विधान में बंधें हैं। श्रेष्ठ और उत्तम जीवन जीने के लिए धैर्यपूर्वक सुख-दुख सहकर सत्य और कल्याणकारी मार्ग पर चलते हुए अपने वर्तमान को उत्तम बनाएं, इसी सद्भाव के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

@ शिव

महामना शिक्षण संस्थान

महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प के तृतीय बैच की छात्राएं माल एवेन्यू, लखनऊ स्थित छात्रावास में अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से कर रही हैं। द्वितीय बैच की छात्राओं को भी पूर्व की भांति आनलाइन सहयोग उपलब्ध कराया जा रहा है। द्वितीय बैच की छात्राओं की प्रतियोगी परीक्षाओं का पहला चरण प्रारंभ हो चुका है (JEE MAINS) और अब बोर्ड परीक्षाएं शुरू होने वाली हैं, अतः सभी छात्राएं परीक्षाओं की तैयारी में व्यस्त हैं। NTA द्वारा mock tests के माध्यम से उनका revision करवाते हुए समयानुसार प्रकल्प द्वारा उनका मार्गदर्शन किया जाता है।

छात्रावास में रहने वाली बालिकाओं के लिए विभिन्न महत्वपूर्ण तिथियों पर कुछ चर्चा या छोटा कार्यक्रम आयोजित किया जाता है ताकि उस विशेष दिन के बारे में उनको और अधिक जानकारी प्राप्त हो व उससे संबंधित शिक्षा को वो आत्मसात कर सकें। इसी क्रम में छात्रावास में जनवरी माह में अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस, स्वामी विवेकानंद जयंती, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती, गणतंत्र दिवस व बसंत पंचमी पर मां सरस्वती की पूजा जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें सभी बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अर्जुन गंज लखनऊ में बालकों के होस्टल की तरह ही बालिकाओं के रहने हेतु एक भव्य भवन का निर्माण करने की न्यास की योजना है। इसी हेतु 5 फ़रवरी को भूमि पूजन का कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें मा. डॉ कृष्णगोपाल जी का आशीर्वाद मिला। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी अगले अंक में दी जाएगी।

चन्द्रशेखर 'आजाद' भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के स्वतंत्रता सेनानी थे। वे शहीद राम प्रसाद बिस्मिल व शहीद भगत सिंह सरीखे क्रान्तिकारियों के अनन्यतम साथियों में से थे। सन् 1922 में गाँधीजी द्वारा असहयोग आन्दोलन को अचानक बन्द करने ने उनकी विचारधारा बदल दी और वे क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़ कर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य बन गये। 9 अगस्त 1925 को काकोरी काण्ड किया । भगत सिंह के साथ लाहौर में लाला लाजपत राय की मौत का बदला सॉण्डर्स की हत्या करके लिया एवं दिल्ली पहुँच कर असेम्बली बम काण्ड को अंजाम दिया। कहा जाता है कि आजाद को पहचानने के लिए अंग्रेजों ने 700 लोग नौकरी पर रखे हुए थे। 27 फ़रवरी 1931 को पुलिस मुठभेड़ में आप अपनी ही गोली से शहीद हो गए।

सेवा चेतना का प्रकाशन

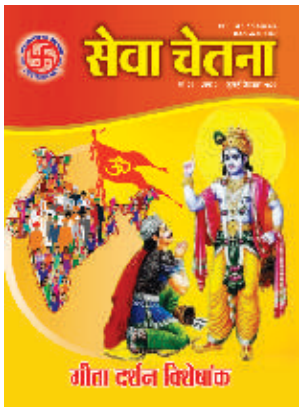

सेवा चेतना का जुलाई - दिसम्बर 2022 का विशेषांक, 'गीता दर्शन' के रूप में प्रकाशित हुआ है। "गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यद् शास्त्रविस्तरै" : इस सूक्ति के महत्व के अनुरूप भगवान्- श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निकली गीता का अनुशीलन करना ही इस विशेषांक का उद्देश्य है। कर्म योग, ज्ञान योग, ध्यान योग, संन्यास योग और भक्ति योग के साथ ही गीता की यौगिक पृष्ठभूमि को प्रकाशित करने वाले तथ्यपरक एवं विचारपरक लेख इस अंक में प्रकाशित हुए हैं। जीवन जीने की कला से लेकर मुक्ति के मार्ग को खोलने वाली निधि से पाठकों को परिचित कराने को यथासम्भव प्रयास किया गया है। अनेक ख्यातिनाम लेखकों ने गीता से सम्बंधित अपने अमूल्य ज्ञान को इन लेखों के माध्यम से पाठकों के लिए गीता में वर्णित धर्म, राष्ट्रधर्म, राष्ट्रीय धर्मग्रन्थ, स्वधर्म , वैज्ञानिक चिन्तन आदि विषयों पर केन्द्रित महत्वपूर्ण उलेखों से सुसज्जित यह विशेषांक पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

'सेवा चेतना', अर्द्धवार्षिक का आगामी अंक (जनवरी-जून, 2023)

'न्यायपालिका' विशेषांक

समूह में रहना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति के कारण उसे अन्य मनुष्यों से सम्बन्ध रखने को बाध्य करती है। सामाजिक सम्बन्धों को व्यवस्थित रखने के लिए मनुष्य के व्यवहार पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। व्यवहार पर नियंत्रण रखने के लिए विधि नियमों का जन्म हुआ। जिससे समाज में शांति व्याप्त हो सके। कुछ लोग इस विधि को दैवीय तो कुछ प्राकृतिक तो अन्य लोग इसे राज्य के द्वारा निर्मित किया गया मानते हैं। राज्य विधिक नियमों के निर्माण के द्वारा नागरिकों को उनके कर्तव्य एवं अधिकारों का बोध कराते हैं तथा अनुचित आचरण एवं व्यवहार के लिए दण्डित करते हैं। जिन्हें समाज उचित मानता है। नैतिकता, औचित्य, विधि, धर्म या समता के आधार पर ठीक होने की स्थिति न्याय उन मान्यताओं तथा प्रक्रियाओं का योग है। जिनके माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को वे सभी अधिकार तथा सुविधायें प्राप्त होती हैं। इस विधि की व्यवस्था हेतु लोकतंत्र के एक प्रमुख स्तम्भ के रूप में न्यायपालिका का गठन होता है। भारतीय संविधान में विधायिका, कार्यपालिका के अतिरिक्त न्यायपालिका को अपने-अपने तरीके से महत्व प्राप्त है परन्तु कभी-कभी इनमें परस्पर सर्वोच्च दिखने के लिए एक-दूसरे के मध्य दरार दिखाई पड़ते हैं। विशेषकर न्यायपालिका दबाव समूह के रूप में अस्वाभाविक हस्तक्षेप विधायिका और कार्यपालिका के कार्य प्रणाली पर करती है। न्यायपालिका का अत्यधिक हस्तक्षेप भी समाजोपयोगी नहीं दिखता। इस समय तो न्याय करनेवाले माननीयों की नियुक्ति प्रक्रिया भी चर्चा का विषय है। उनकी नियुक्ति की प्रक्रिया कालेजियम के द्वारा उचित है अथवा सामूहिक निर्णय के आधार पर प्रतिभा को केन्द्र में रखकर न्यायकर्त्ताओं की नियुक्ति हो यह भी विचारणीय हो गया है। राजनीति की तरह न्याय व्यवस्था को भी भाई-भतीजावाद से ऊपर उठने की प्रासंगिकता से इनकार नहीं किया जा सकता। सामूहिक बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय अधिक सम्यक् माना जाता है।

इन सभी विषयों के आलोक में प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय पर आधारित तथ्यपरक आलेख आपसे अपेक्षित है। आप अपना आलेख 30 अप्रैल 2023 तक भेजकर अनुगृहीत करें।

सम्पादक, 'सेवा चेतना' (अर्द्धवार्षिक)

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020

सुफलाम - पृथ्वी तत्व

भारतीय चिंतन को विज्ञान के रूप में रखते हुए जन सामान्य को पंच भूतों के प्रति श्रद्धा भाव रखने की परंपरा को विकसित करने की संकल्पना को धरातल पर लाने की बात काशी हिंदू विश्वविद्यालय स्थित कृषि विज्ञान संस्थान, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, भारतीय किसान संघ और अक्षय कृषि परिवार के संयुक्त तत्वावधान में संस्थान के शताब्दी सभागार में सुफलाम पृथ्वी तत्व पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य भैया जी जोशी ने कही। साथ ही उनका यह भी कहना था कि संपूर्ण विश्व अभी भी भ्रमित हो दोराहे पर खड़ा है। पहला रास्ता आधुनिक विकास का है और दूसरा रास्ता मूलभूत जाने से समझौता न करते हुए विकास के मार्ग पर चलने का है। श्री जोशी ने कहा कि केवल पृथ्वी पर ही जड़ चेतन का अस्तित्व है, केवल भारतीय परिप्रेक्ष्य में ही सुजलाम सुफलाम शब्द का प्रयोग हुआ है। भारत का मानस बंद दरवाजों का नहीं है हम दुनिया भर के विचारों का स्वागत करते है, मगर वह विचार जीव जगत के लिए हितकारी होना चाहिए वर्तमान में नए तंत्र से हम दूसरों को भी अन्न देने में सक्षम हुए हैं, मगर दूसरी और भूमि के पोषण का प्रश्न भी हमारे सामने खड़ा हुआ है। भैया जी ने यह भी कहा कि हम आधुनिकता के पक्षधर हैं मगर मर्यादाओं का पालन करने वाले हैं, भारत जो विचार दुनिया को दे रहा है उन विचारों का जीता जागता नमूना भी दिखाई पड़ना चाहिए, हमें संघर्ष नहीं बल्कि समन्वय के मार्ग से पृथ्वी की समस्याओं का समाधान करना है। दुनिया को मध्य मार्ग इसे सुवर्ण मध्य कहा गया है ऐसे मार्ग पर चलाने वाला भारत हो ऐसा विश्वास है। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए भारत सरकार के माननीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी ने कहा कि आज पूरी दुनिया में जलवायु परिवर्तन की चर्चा जोरों से है ,इसके लिए मानव जाति ही जिम्मेदार है। ऐसे परिस्थिति में किसी न किसी को आगे आकर सुधार करना ही होगा। भारत की संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांतों पर आधारित है, पूर्वजों के इस ज्ञान को और अधिक शक्ति प्रदान करने की आवश्यकता है। भारत में 12 स्थानों पर सुफलाम का सफल आयोजन हो चुका है। वर्तमान समय में माननीय प्रधानमंत्री जी भी पंच भूतों के संरक्षण हेतु भारत अथवा दुनिया के हर राजनीतिक मंच पर भारतीय ज्ञान को रख रहे हैं। यह अच्छी बात है कि उत्पादन के संदर्भ में कई क्षेत्रों में भारत नंबर एक पर है, परंतु फिर भी हमें सरकार और समाज के साथ मिलकर पृथ्वी पर पड़ रहे दुष्प्रभाव को रोकने के संदर्भ में काम करना होगा। प्रधानमंत्री जी का पूरा ध्यान प्राकृतिक खेती पर है। जिस प्रकार दुनिया के राजनीतिक मंच पर योग को स्थापित किया गया और दुनिया ने उसे स्वीकार किया। इसी प्रकार से मोटे अनाज को भी मान्यता मिली है। वर्ष 2023 संयुक्त राष्ट्र संघ ने मोटे अनाज का वर्ष घोषित किया है। वर्तमान में जी-20 की अध्यक्षता भी भारत के पास है यह प्रसन्नता का विषय है। आने वाले वर्षों में वन अर्थ वन फैमिली वन फ्यूचर पर विमर्श होगा। सत्पथाचार्य जगतगुरु ज्ञानेश्वर दास जी महाराज जी ने कहा कि वैदिक परम्परों में पांच तत्वों को महत्व दिया गया है, भूमि को माता कहा गया है ,क्योंकि वो सबकी पोषक है दूसरी हमारी गौ माता है। यदि हम भू-माता और गौमाता की रक्षा नहीं करेंगे तो तमाम समस्याएं प्रकट होती रहेंगी। भूमि-पुत्र किसान, भूमि से जुड़ा रहता है; भूमि ही उसकी अन्नदाता है। इसीलिए हम भूमि के पांच तत्वों की समस्या को कम करने की दिशा में काम कर सकते हैं। कार्यक्रम की विषय स्थापना भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मोहिनी मोहन मिश्रा जी ने की। सत्पथाचार्य जगतगुरु ज्ञानेश्वर दास जी महाराज कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे और कार्यक्रम की अध्यक्षता बीएचयू के कुलगुरु प्रोफेसर वी के शुक्ला जी ने की। कार्यक्रम का संचालन भाऊराव देवरस सेवा

न्यास के सचिव श्री राहुल जी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन कृषि विज्ञान संस्थान के प्रोफेसर राकेश सिंह जी ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही जी, भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री दिनेश कुलकर्णी जी, प्रख्यात उद्योगपति श्री मनोज भाई सोलंकी जी, भाऊराव देवरस सेवा न्यास के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल जी, कृषि विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रोफेसर यशवंत सिंह जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय गौ सेवा प्रमुख श्री अजीत प्रसाद महापात्रा जी, माननीय क्षेत्र कार्यवाह श्री वीरेंद्र जायसवाल जी, समग्र ग्राम विकास के श्री चंद्र मोहन जी सहित बड़ी संख्या में प्रोफेसर एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

भाऊराव देवरस स्मृति छात्रवृत्ति

न्यास का लक्ष्य सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लोगों का सम्पूर्ण विकास करने के लिए उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ी विभिन्न योजनायें क्रियान्वित करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षा बिना व्यवधान के चले इसीलिए छात्रवृत्ति देने की योजना 1995-96 में प्रारम्भ की गई। वर्तमान में जम्मू-कश्मीर, पूर्वांचल, उत्तर पूर्व और वनवासी क्षेत्रों के साथ साथ पूरे देश से भी कुछ चयनित विद्यार्थियों को मिलाकर 200 से अधिक विद्यार्थियों को वार्षिक छात्रवृत्ति दी जा रही है।

इस वर्ष भी 250 विद्यार्थियों को कुल 10,17,000 रू की राशि छात्रवृत्ति के रूप में न्यास की ओर से वितरित की गई।

लाभान्वित विद्यार्थी निम्न संस्थाओं से हैं :

- भारतीय विद्या निकेतन स्कूल, लद्धाख
- दौलतराम रवाल्टा सरस्वती विद्या मंदिर, मूंग्रा
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, किश्तवार, जम्मू कश्मीर
- वनवासी कन्या छात्रावास समिति, रूद्रपुर
- उत्तराँचल दैवीय आपदा पीड़ित सहायता समिति
- वन्दनीया लक्ष्मी बाई केलकर स्मारक समिति, असम
- दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार
- सेवा भारती पूर्वान्चल, असम
- विद्या भारती, सिक्किम
- मातृआँचल कन्या विद्यापीठ, हरिद्वार
- सेवा समर्पण संस्थान, लखनऊ
- विद्या भारती, रूद्रप्रयाग
- सेवा प्रकल्प संस्थान, आगरा
- न्यास के कुछ कर्मचारियों के बच्चे

इसके साथ ही 7 संस्थाओं को भी 70,000 रू की राशि के रूप में वार्षिक सहयोग प्रदान किया गया। इनके नाम हैं :

- मातृभूमि सेवा मिशन, कुरुक्षेत्र, हरियाणा
- प्रबोधिनी ट्रस्ट, कर्नाटक
- भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, छत्तीसगढ़
- शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली
- वरदान सेवा संस्थान, गाज़ियाबाद
- सक्षम, नागपुर
- बालासाहेब एवं भाऊराव देवरस सेवा न्यास, मध्य प्रदेश

अक्षय सेवा प्रकल्प - दिल्ली

स्वामी विवेकानन्द का कथन है - नर सेवा नारायण सेवा

अक्षय सेवा प्रकल्प 28 अप्रैल 2017 से भाऊराव देवरस सेवा न्यास के अंतर्गत तीन अस्पतालों एम्स दिल्ली, सफदरजंग और राम मनोहर लोहिया अस्पताल के निकट 2000 से अधिक लोगों को भोजन करा रहा है। लगभग 50 लाख लोग इससे लाभान्वित हो चुके हैं।

सभी सुधीजनों की शुभेच्छाओं के परिणाम स्वरुप अक्षय सेवा प्रकल्प 14 जनवरी को मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर दिल्ली में एक और स्थान पर दोपहर का भोजन वितरण प्रारम्भ करने में सक्षम हुआ। लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के निकट यह केंद्र प्रारम्भ हुआ। जरूरतमंद लोगों की सेवा के उद्देश्य से प्रारम्भ हुए इस केंद्र पर न्यास की योजना से नित्य भोजन वितरण किया जा रहा है। इसके अच्छे अनुभव भी आ रहे हैं। अब प्रतिदिन लगभग 2500 लोगों को भोजन कराने में यह प्रकल्प समर्थ हो गया है।

अक्षय सेवा प्रकल्प का प्रयास रहता है कि अधिक से अधिक लोग परिवार सहित वहां पर अवश्य पधारें और अपने हाथों से भोजन वितरण करने का सुख प्राप्त करें।

भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान - 2022-23

वक्ता : **आदरणीय पराग जी अभयंकर**, मा. अ. भा. सेवा प्रमुख, रा.स्व.संघ

दिनांक व समय : 18 मार्च 2023, शनिवार, सायं 5.30 बजे

कार्यक्रम स्थल

स्वस्ति सभागार, श्रीमती ब्रह्मदेवी सरस्वती बालिका विद्या मंदिर परिसर
केशव नगर, मोदीनगर रोड, हापुड़-245101, उत्तर प्रदेश

समर्थ भारत - दिल्ली

- प्रमाणपत्र वितरण – दिनांक 10 जनवरी 2023 को संगम विहार सैनिक फार्म प्रशिक्षण केंद्र पर GST और टैली का कोर्स कर चुके पहले बैच के 16 प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किये गए।
- आई एन ए प्रशिक्षण केंद्र – ब्यूटिशियन कोर्स - इस केंद्र पर ब्यूटिशियन के पहले बैच का एक सप्ताह की ट्रायल क्लास के बाद 16 जनवरी से विधिवत प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ जिसमें 22 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण सुश्री अंजली जी के द्वारा दिया जा रहा है। प्रशिक्षण उपरांत सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। इस माह के विषय हैं - वैक्स, थ्रेड, फेस ब्लीच, फेसिअल, फेस प्रैक्टिस, ओजोन फेसिअल, गैल्वेनिक फेसिअल आदि।
  - प्रशिक्षार्थियों को बैंक से लोन लेने हेतु आवेदन पत्र लिखने का अभ्यास करवाया गया।
  - दिनांक 25 जनवरी को केंद्र पर गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया।

- कड़कड़डूमा प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ – ब्यूटिशियन कोर्स - इस केंद्र पर ब्यूटिशियन के तीसरे बैच का प्रशिक्षण तीन माह के पश्चात 31 जनवरी को पूर्ण हुआ। इस बैच में 2 5 प्रशिक्षार्थियों को श्रीमती निधि दीक्षित जी के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र दिया जायेगा । इस माह के विषय – हेयर कलर, केरातिन, प्रेक्टिस, आई मेकअप, हेयर स्टाइल, हल्दी और ब्राइडल मेकअप आदि। प्रशिक्षार्थियों को बैंक से लोन लेने हेतु आवेदन पत्र लिखने का अभ्यास करवाया गया।
- कड़कड़डूमा प्रशिक्षण केंद्र – ए.सी. और रेफ्रीजिरेटर कोर्स - इस केंद्र पर दूसरे बैच का 14 प्रशिक्षार्थियों का एक माह का प्रशिक्षण दिनाक 06 जनवरी को प्रारंभ हुआ। प्रशिक्षण श्री दीपक दत्त जी के द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण उपरांत सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। इस माह के विषय – स्विंग एंड ब्रजिंग, विंडो एसी सर्विसिंग, स्प्लिट एसी सर्विसिंग, संस्कार आदि।

- टैंक रोड, करोलबाग़ प्रशिक्षण केंद्र – ब्यूटिशियन कोर्स - इस केंद्र पर तीसरे बैच के 23 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण श्रीमती शालिनी चौहान जी के द्वारा दिया जा रहा है। अंत में सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। इस माह के विषय – स्टेप कट, लेयर कट, स्मूथिंग, हेयर प्रेसिंग, मेंहदी, हेयर स्टाइल, लाइट यू कट, हेयर ट्रीटमेंट, हेयर कलरिंग, मेकअप, आई मेकअप आदि।
- संगम विहार, सैनिक फार्म केंद्र – जी एस टी और टैली कोर्स - इस केंद्र पर 15 प्रशिक्षार्थियों के साथ द्वितीय बैच का प्रशिक्षण दिनांक 10 जनवरी से प्रारंभ हुआ जो कि पूरे माह चला। प्रशिक्षण सुश्री रीना प्रजापति जी के द्वारा दिया गया। दिनांक 20 जनवरी को गेस्ट लेक्चर में माननीय सीए पुष्पेन्द्र गुप्ता जी ने बच्चों को बेसिक एकाउंटिंग को रोचक तरीक़े से समझाया।
- RPL प्रशिक्षण, हेयर स्टाइलिस्ट – दिनांक 16 एवं 17 जनवरी को दो दिवसीय RPL (Recognition of Prior Learning) का प्रशिक्षण प्रधानमंत्री कौशल केंद्र, अटल आदर्श बाल विद्यालय, मंदिर मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली में दिया गया। इसमें 12 हेयर स्टाइलिस्ट ने भाग लिया जोकि पिछले कई वर्षों से रोड पर सड़क के किनारे बाल काटने का कार्य कर रहे थे। उन्हें अब इस प्रशिक्षण के उपरांत एक प्रमाणपत्र दिलवाकर प्रमाणित हेयर स्टाइलिस्ट बनाया जा रहा है।

पं प्रताप नारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान

देश के युवा साहित्यकारों की लेखनी देश को समर्पित हो और उनके लेखों से राष्ट्रीय और सामाजिक मूल्यों का प्रसार हो इस दृष्टि से प्रतिवर्ष न्यास द्वारा ऐसे 6-7 युवा साहित्यकारों को "पं. प्रताप नारायण स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान" प्रदान कर उनका उत्साह वर्धन किया जाता है।

न्यास द्वारा ऐसा ही आयोजन गत 8 जनवरी को लखनऊ में हुआ। मुख्य अतिथि थे उत्तर प्रदेश के मा. उप-मुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक जी और विशिष्ट अतिथि थे उत्तर प्रदेश के मा. उच्च-शिक्षा मंत्री श्री योगेन्द्र उपाध्याय जी। कार्यक्रम की अध्यक्षता बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय, राजस्थान के मा. कुलपति श्री अम्बरीश विद्यार्थी जी ने की। न्यास की ओर से सह-सचिव श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, न्यासी एवं महामना शिक्षण संस्थान के सचिव श्री रंजीव तिवारी जी और प्रकल्प के संयोजक डॉ. विजय कर्ण जी उपस्थित थे।

6 युवा साहित्यकारों - श्री देवेन्द्र कश्यप निडर - काव्य; श्री मृदुल कपिल जी - कथा साहित्य; सुश्री सृष्टि पाण्डेय - बाल साहित्य; डॉ अमित कुमार सिंह कुशवाहा - पत्रकारिता; डॉ संजय कुमार चौबे - सस्कृंत और डॉ. सुनील के एस - कन्नड़ भाषा साहित्य को विभिन्न विधाओं के अंतर्गत सम्मानित किया गया।

लखनऊ में मकर संक्रांति पर खिचड़ी भोज

प्रतिवर्ष माधव सेवा आश्रम, लखनऊ में मकर संक्रांति के पावन पर्व पर खिचड़ी भोज का आयोजन होता है जिसमें समाज के अनेक प्रबुद्धजन भी भाग लेते हैं। यह कार्यक्रम मकर संक्रांति से अगले रविवार को आयोजित होता है।

इस वर्ष का आयोजन 22 जनवरी को हुआ जिसमें भाग लेने वाले प्रमुख कार्यकर्ता थे - संघ के प्रान्त प्रचारक श्री कौशल जी, विद्याभारती के राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिवकुमार जी, केन्द्रीय आवास एवं शहरी विकास मंत्री श्री कौशल किशोर जी, उत्तर प्रदेश के सूचना आयुक्त श्री सुभाष सिंह जी, क्षेत्र कुटुंब प्रबोधन प्रमुख श्री अशोक उपाध्याय जी, क्षेत्र सीमा जागरण प्रमुख श्री अशोक केडिया जी, सी.एम.एस. डॉ गौरव अग्रवाल, उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य श्री पवन सिंह चौहान जी, विधायक श्री अमरेश रावत जी, न्यास के न्यासी एवं सह-सचिव श्री जितेन्द्र अग्रवाल जी, न्यासी श्री अश्विनी कुमार जी गुप्त, न्यासी श्री रंजीव तिवारी जी, न्यास के विशेष आमंत्रित सदस्य श्री शरद जी जैन और श्री विश्वनाथ खेमका जी, राष्ट्रीय मुस्लिम महिला पर्सनल लॉ बोर्ड की सदस्या शाहिस्ता अम्बर जी आदि। साथ ही कुछ माननीय संतजन भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में समाज के एक हज़ार से अधिक लोगों ने भागीदारी की।

कार्यक्रम में इस वर्ष वनवासी कल्याण आश्रम की योजना से चलने वाले सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा का एक स्टाल लगाया गया था जिसके माध्यम से संस्थान में रहने वाले 50 वनवासी बच्चों एवं 15 कुष्ठरोगी परिवारों के लिए मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में राशन एकत्र किया गया। समाज के सहयोग से लगभग 2 माह का राशन एकत्र हो गया जो कि संस्थान के लिए एक बहुमूल्य सहयोग है।

इस प्रकार एक सफल आयोजन प्रकल्प के कार्यकर्ताओं के परिश्रम से आयोजित हुआ।

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

ऋषिकेश पावन धरती पर एम्स के निकट बन रहे माधव सेवा विश्राम सदन में बनने वाले तलों में से बेसमेंट का कार्य दिसंबर मास में पूर्ण हो गया था। जनवरी मास में भूतल की छत का कार्य भी पूर्ण हो गया और प्रथम तल के आगे वाले हिस्से की छत डालने का कार्य 25 जनवरी को पूर्ण हो गया। अब उसके पीछे वाले हिस्से की छत की तैयारी चल रही है। साथ ही जिन

श्री संजय गर्ग जी

श्री गोविन्द राम अग्रवाल जी

जगहों की छत डल गई है वहां पर दीवार बनाने का कार्य प्रगति पर है। आशा है कि 25 फ़रवरी तक प्रथम तल की छत डालने का कार्य पूर्ण हो जाए।

समय समय पर न्यास से जुड़े बंधुओं का आगमन निर्माण स्थल पर होता रहता है जो प्रकल्प के कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा का कार्य करता है।

आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूजनीय माधव राव जी गोलवलकर की स्मृति में देवभूमि ऋषिकेश में एम्स अस्पताल के निकट माधव सेवा विश्राम सदन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस सदन का उपयोग साधु संतों, एम्स ऋषिकेश में उपचार के लिए आने वाले रोगियों व उनके सहायकों द्वारा किया जाएगा। यह कार्य आपका अपना ही है, इसे अनुभव करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपके द्वारा दी गई राशि 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका यही सहयोग निर्मित होने वाले इस विश्राम सदन के शीघ्रातिशीघ्र साकार रूप लेने में सहायक होगा।

आपके परिवार में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाएं।

भारतीय स्टेट बैंक, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली

A/C: 40692412361
IFSC : SBIN0000625

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :

MCA में न्यास की CSR पंजीकरण संख्या **CSR00004454**
80G में न्यास की पंजीकरण संख्या **AAATB1049GF20217**
न्यास की FCRA पंजीकरण संख्या **136550134**

पावन स्मृति - फ़रवरी

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया,अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

दिनांक	दिवस	महापुरूषों का नाम
4 फ़रवरी	इतिहास स्मृति	गढ़ आया पर सिंह गया
4 फ़रवरी	बलिदान दिवस	धर्मवीर हकीकत राय
5 फ़रवरी	जन्म दिवस	गुरू रविदास
7 फ़रवरी	पुण्य तिथि	विलक्षण सन्यासी करपात्री जी महाराज
12 फ़रवरी	बलिदान दिवस	पूर्वांचल के महान क्रान्तिवीर सम्भुधन फोंगलो
12 फ़रवरी	जन्मदिवस	आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती
13 फ़रवरी	जन्मदिवस	भारत कोकिला सरोजिनी नायडु
16 फ़रवरी	जन्म दिवस	महाप्राण निराला तथा ठाकुर रामसिंह
16 फ़रवरी	जन्म दिवस	एक महान संत एवं विचारक स्वामी रामकृष्ण परमहंस
17 फरवरी	बलिदान दिवस	सह्याद्रि का शेर : वासुदेव बलवंत फड़के
19 फ़रवरी	जन्म दिवस	तपस्वी जीवन – श्री गुरूजी
20 फ़रवरी	जन्म तिथि	महात्मा ज्योतिबा फुले
23 फ़रवरी	जन्म दिवस	सरदार अजीत सिंह
26 फ़रवरी	पुण्य तिथि	वीर सावरकर
27 फ़रवरी	बलिदान दिवस	अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद
27 फ़रवरी	जन्म दिवस	भक्तिकाल के प्रमुख कवि - चैतन्य महाप्रभु
29 फ़रवरी	जन्मदिवस	भारत के छठे प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई

गुरु रविदास

(जन्म - माघ पूर्णिमा 1377, मृत्यु - वर्ष 1528)

गुरु रविदास अथवा रैदास मध्यकाल में एक भारतीय संत थे जिन्होंने जात-पात के अन्त विरोध में कार्य किया। इन्हें सतगुरु अथवा जगतगुरु की उपाधि दी जाती है। इन्होंने रैदासिया अथवा रविदासिया पंथ की स्थापना की। इनके रचे गये कुछ भजन सिखों के पवित्र ग्रंथ गुरुग्रंथ साहिब में भी लिए गए हैं।

गुरू रविदास (रैदास) का जन्म काशी में माघ पूर्णिमा को संवत 1398 को हुआ था। उनके पिता संतोख दास तथा माता का नाम कलसां देवी था। रैदास ने साधु-सन्तों की संगति से पर्याप्त व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया था। वे जूते बनाने का काम पूरी लगन तथा परिश्रम से करते थे और समय से काम को पूरा करने पर बहुत ध्यान देते थे। संत रामानन्द के शिष्य बनकर उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान अर्जित किया। संत रविदास जी ने स्वामी रामानंद जी को कबीर साहेब जी के कहने पर

गुरु बनाया था, जबकि उनके वास्तविक आध्यात्मिक गुरु कबीर साहेब जी ही थे। उनकी समयानुपालन की प्रवृति तथा मधुर व्यवहार के कारण उनके सम्पर्क में आने वाले लोग भी बहुत प्रसन्न रहते थे। प्रारम्भ से ही रविदास जी बहुत परोपकारी तथा दयालु थे और दूसरों की सहायता करना उनका स्वभाव बन गया था। साधु-सन्तों की सेवा करने में उनको विशेष आनन्द मिलता था। वे उन्हें प्राय: जूते भेंट कर दिया करते थे। वे तत्परता से अपने व्यवसाय का काम करते थे और शेष समय ईश्वर-भजन तथा साधु-सन्तों के सत्संग में व्यतीत करते थे। उनकी एक कहावत बहुत प्रचलित है –"मन चंगा तो कठौती में गंगा"।

आज भी सन्त रैदास के उपदेश समाज के कल्याण तथा उत्थान के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पर महान नहीं होता है। विचारों की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद्व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान बनाने में सहायक होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण सन्त रैदास को अपने समय के समाज में अत्यधिक सम्मान मिला और इसी कारण आज भी लोग इन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। रैदास के 40 पद गुरु ग्रन्थ साहब में मिलते हैं जिसका सम्पादन गुरु अर्जुन देव जी ने 16 वीं सदी में किया था।

पूर्वांचल के महान क्रान्तिवीर सम्भुधन फोंगलो

(जन्म 16 मार्च 1850, मृत्यु 12 फ़रवरी 1883)

ग्राम लंकर (उत्तर कछार, असम) में सम्भुधन फोंगलो का जन्म फागुन पूर्णिमा, 1850 ई में हुआ। डिमासा जाति की इनकी माता कासादीं तथा पिता का नाम देप्रेन्दाओ फोंगलो था। सम्भु बचपन से ही शिवभक्त थे। एक बार वह दियूंग नदी के किनारे कई दिन तक ध्यानस्थ रहे। इसके बाद तो दूर-दूर से लोग उनसे मिलने आने लगे। वह उनकी समस्या सुनते और उन्हें जड़ी-बूटियों की दवा भी देते। उन दिनों पूर्वांचल में अंग्रेज अपनी जड़ें जमा रहे थे। सम्भुधन को इनसे बहुत घृणा थी। वह लोगों को दवा देने के साथ-साथ देश और धर्म पर आ रहे संकट से भी सावधान करते रहते थे। धीरे-धीरे उनके विचारों से प्रभावित लोगों की संख्या बढ़ने लगी।

एक समय डिमासा काछारी एक सबल राज्य था। इसकी राजधानी डिमापुर थी। पहले अहोम राजाओं ने और फिर अंग्रेजों ने 1832 ई में इसे नष्ट कर दिया। उस समय तुलाराम सेनापति राजा थे। वे अंग्रेजों के प्रबल विरोधी थे। 1854 ई में उनका देहान्त हो गया। अब अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में फैले विद्रोह को दबाने के लिए राज्य को विभाजित कर दिया।

सम्भुधन ने इससे नाराज होकर एक क्रान्तिकारी दल बनाया और उसमें उत्साही युवाओं को भर्ती किया। इनकी गतिविधियों से अंग्रेजों की नाक में दम हो गया।

उस समय वहाँ अंग्रेज मेजर बोयाड नियुक्त था। वह बहुत क्रूर था। वह एक बार सम्भुधन को पकड़ने माइबांग गया; पर वहाँ युवकों की तैयारी देखकर डर गया। अब उसने जनवरी 1882 में पूरी तैयारी कर माइबांग शिविर पर हमला बोला; पर इधर क्रान्तिकारी भी तैयार थे। मेजर बोयाड और सैकड़ों सैनिक मारे गये। अब लोग सम्भु को 'कमाण्डर' और 'वीर सम्भुधन' कहने लगे।

सम्भुधन अब अंग्रेजों के शिविर एवं कार्यालयों पर हमले कर उन्हें नष्ट करने लगे। इधर अंग्रेज उनके पीछे लगे थे। 12 फरवरी, 1883 को वह अपने घर में भोजन कर रहे थे, तो सैकड़ों अंग्रेज सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। उस समय सम्भुधन निःशस्त्र थे। अतः वह जंगल की ओर भागे; पर एक सैनिक द्वारा फेंकी गयी खुखरी से उनका पाँव बुरी तरह घायल हो गया। अत्यधिक रक्तस्राव के कारण वह गिर पड़े। उनके गिरते ही सैनिकों ने घेर कर उनका अन्त कर दिया। इस प्रकार केवल 33 वर्ष की छोटी आयु में वीर सम्भुधन ने मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

विश्राम सदनों में जनवरी-2023 में आने वाले नए रोगी व सहायक

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर	योग
1	जम्मू कश्मीर			19		5	24
2	हिमाचल प्रदेश			8			8
3	पंजाब	3	3	1		5	12
4	हरियाणा	2		18	1	274	295
5	दिल्ली	13		22	6	114	155
6	उत्तराखंड		2	26	4	16	48
7	उत्तर प्रदेश	1687	810	223	2	435	3157
8	बिहार	1070	44	251	2275	113	3754
9	झारखण्ड	90	3	30	33	20	176
10	सिक्किम				1	1	2
11	नागालैंड						
12	असम	2		3		1	6
13	मणिपुर /मिजोरम						
14	अरुणाचल प्रदेश						
15	त्रिपुरा			6			6
16	मेघालय						
17	प. बंगाल	8		34	4	8	54
18	ओडिशा/अंदमान			5	3	4	12
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना						
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी						
21	कर्नाटक						
22	केरल			3			3
23	महाराष्ट्र /गोवा	4	11		1	3	19
24	मध्य प्रदेश	51		38	1	18	108
25	छत्तीसगढ़	10		2			12
26	गुजरात						
27	राजस्थान		1	19		25	45
28	अन्य						
	पड़ोसी देश						
29	नेपाल	6		8	10	4	28
30	बांग्लादेश						
31	अन्य देश						
	योग (इस मास)	**2946**	**874**	**716**	**2341**	**1047**	**7924**
	योग (अप्रैल 22 - मार्च 23)	**26741**	**7753**	**5982**	**18395**	**6519**	**65390**

RNIN-UPHIN/2005/15853

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केंद्र	जनवरी	अप्रैल 22 से
वेदांत आश्रम पपनामऊ चिनहट	0	196
सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा	166	1400
गोपाल पुरा	58	177
51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब	25	413
अम्बेडकर नगर	15	303
माधव सेवा आश्रम	17	133
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केंद्र		
एलोपेथिक	550	5441
होम्योपैथिक	349	3221
रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम	210	2535
कुल लाभान्वित रोगी	1390	13519

नेत्र चिकित्सा (जनवरी)

	देवड़े नेत्र चिकित्सालय लखनऊ	अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	योग (अप्रैल 2022 से)
नेत्र परीक्षण	450	1983	25322
चश्मा वितरण	215	1301	17527
मोतियाबिंद ऑपरेशन	11	0	150
Fundus Test	0	0	48
OCT Test	0	0	6
पैथोलॉजी	134	0	1867

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जाँच केवल 20 रूपये के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन, सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	संपर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती सीमा अग्रवाल	9335922353
सामाजिक विज्ञानं एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू. , लखनऊ	श्री जितेन्द्र अग्रवाल	9415003111
देवडे नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
विश्राम सदन, एम्स , दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, आई. जी. आई. एम. एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600
माधव सेवा विश्राम सदन , ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952
अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	डॉ सुशील उपाध्याय	9554966006

बुक पोस्ट
छपा-साहित्य

सेवा में,

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226002 से मुद्रित, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-262020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी